सं.श्रो.कि./पानीका/49-84/.३361--- हुँकि हरियाणा के राज्यपाल की राये हैं कि मैं. दें कश्काल सैन्ट्रल कोठ श्रोप० बैंक किठ, कालाल के श्रमिक श्रो सलिक कम तथा को प्रवस्तकों के मध्य इसमें इसके वाद विधित सामलें के सम्बन्ध में कोई - श्रीयोगिक विवाद है;

म्रोर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करता बांछनीय समतते हैं ;

इसलिये. ग्रंब, ग्रोद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए. हरियाणा के राज्यान इसके हारा सरकारी ग्रीधिस्थता में 3(44)-84-3-धम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 हारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायाला ग्रम्बाना को विवादण्या था उससे सम्बन्धिन नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिण्ड वसते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिय के बीच या से विवादण्या का ला है या विवाद से ससंगत ग्रथवा संविधन मामला है :---

क्या श्री रूपिया राम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. थ्रो. वि./एफ.डी./2. 1–8 ई8.367.—चूँकि हरियाणा के राज्यपाल की राघ है कि मै० ब्राईणर गुडर्थ लि०, एन० ब्राई० टी० फरोदाबाद, के अमिक थी देम चन्द तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ब्रीद्योगिक विवाद है ;

भौरः चूंकिः हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिग्द करना बां**छ**नीय समझते हैं 🕻

इसलिये, ग्रव, ग्रीतोगिक जिनाद अधिनियम 1047 की धारा 10 की उमधारा (ः) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई प्रावितयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा मरकारी अधिमृत्रना मं. 5415-3-अम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए ग्रधिसृत्रना सं. 1! 195-जी-अम 88-अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायात्रय, फरीदावाद, की विवादग्रम्त या उसके सुसंगत या उससे सम्यन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निविद्ध करते हैं, जो कि उत्तर प्रयन्धानें तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रम्त मामला है या विवाद से मुसंगत अथवा सम्बन्धित सामला है:---

वया भी प्रेम• चन्द की सेवाओं का समापन न्याकों जन तथा ठीक है ? यदि नहीं तो बह किस राहन का हकदार है ?

म. स्रो रि/एफ०डी०/30-85/8374.—वृंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये हैं कि मै० न्यू विश्वकर्मा स्राटो इण्ड०. 5, जे० 107 के० सी० सिनेमा के सामने, फरोदाबाद के श्रमिक श्री किशन जन्द चीहान तथा उसके प्रश्रकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामने में थोई भौडोगिक विदाद है ;

भौर चुकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेनु निवित्य करना वाछनीय समझते हैं;

इन तिर् पा, प्रीपोगिक विराद प्रवित्तान, 1947, को बारा 19 को उपबास (1) के बण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई जिल्त मों का बरोग करते हुए, हरियाण के राज्यान इस के द्वारा परकारी प्रश्चिमूलना सं. 5 115-3-अम/68/15254, दिलांक 20 जून, 1968 के भाष पहले हुए। प्रश्चितून सं. 11495 जा-अन-98-अम/57/11445, दिलांक 7 करवरी, 1953, द्वारा उक्त प्रश्चितियम की घारा 7 के अधीन गठित अन न्यायालय, फरीदावाद, को वियादशस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्यन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्गय के लिए निर्दिश्य करते हैं, जो कि उक्त प्रश्चिम व्या अमिक के बीच या हो विवादशस्त मामला है या विवाद से मुसंगत या संबंधित मामला है :--

वया श्री किणन चन्द चौहान की सेपाओं का समापन न्यासोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो यह किस ाहत का इकदार है ?

मं ओ. वि |एफ॰ई.०/३०-85/8381.--चूंकि हरियाणा है राज्यपाल की राय है कि मै. कोहिनुर पेन्टस प्रा० लि॰, 14/5, मथुरा रोड, फरीदादाद के श्रमिक श्री छवी लाल तथा उसके प्रक्राधकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई पौद्योगिक विवाद है :

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना अंद्रवनीय समझते हैं ;

इसिन्य, ग्रव, ग्रीबोगिक विवाद प्रिवित्यम, 1917, की घारा 10वी उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई विकायों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिमूचना सं. 5415-3-धम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुये अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम /57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अविनियम की धारा 7 के अवीन गिव्त श्रम स्थापात्त्व, फरोश बाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे विद्धा मामला स्थाय निर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धको तथा श्रमिक के दीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत अथवा सम्बंधित मामला है:—

क्या श्री छवी लाल की से सभी का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो यह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो.वि./गानीपत्र/285/8338.—वं)क हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० सुपर संत्व इण्डिया क्ंजपुरा रोड करनाल, के श्रमिक श्री मुल्लान िंह तथा उसक प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके जाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है ;

ग्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निदाट करना बाछकीय समज्ञते हैं;

इसिलये, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद श्रिशिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिरतयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्य तल इसके द्वारा सरकारों ग्रिशिसूचना सं. 3(44)84-3-श्रम, विनांक 18 ग्रप्रैंत. 1984 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठिन श्रम न्यायालय, ग्रन्थाना को विवादग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला भाय- निर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं. जो कि उक्त प्रवन्धानों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त भामला है या विवाद से मुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री मृलतान िंह की सेवाधों का क्षमापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

स. ग्रो.बि./एफ.ो./87-84/8394.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये हैं कि मैं० एलन्स फटन मिहज, लिं० मधुरा रोट बल्यभग्र, के श्रीमक श्री मृज्य ित तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिया विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल क्विप्द को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, श्रव, भौद्यंगिक विवाद श्रधिनियम, 1947, की, धारा 10 की उपधारा (1) है खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करने हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए ग्रधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त ग्रधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद, को दि गदग्रन या उससे सुभंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिग्द करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के विवाद या तो विवादप्रका मामला है या विवाद से सुभंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री सूरज शिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० प्रो० वि०/एफ.जी./201-84/8401.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि में. अनुमाएन्टरप्राइजिज, 169/5, एन.ब्राई.टी. फरीदाबाद, के श्रमिक श्री राम नारायण भर्मा तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ब्रौद्योगिक विवाद है ;

भ्रौर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिग्ट करना बांर्स्टनं,य समझते हैं ;

इसलिये, प्रव, श्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वार प्रदान की गई भवितयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यगल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम 68/15254, दिनांक 30 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-ध्यम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के प्रशासित अमन्यायातया, फरीदाबाद को विवादप्रस्त, या जमा सुसंगत या जमसे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्त्वकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत ग्रथवा मम्बन्धित मामला है:--

क्या श्री राम नारायण ग्रमी की सेवाशों का समापन न्यापोचित तथा ठीक है ? यदि तहीं, तो वह किस राहत का हकदार है 🤅